International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजी सेठ के उपन्यास साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Poonam Nag
Research Scholar
DBHPS,Dharwad

राजी सेठ द्वारा रचित 'तत्सम' में उपन्यास के केंद्रीय पात्र पर उनकी स्थितियों को लेकर लचनवाला अंतर्द्वंद सारे कथानक पर छाया रहता है। उदाहरणस्वरूप बहुत अकेलेपन की पलकों से उभरता हुआ एक वाक्य सहसा उसे अपनी रूममेट रूथ की याद दिलाता है।

"जिंदगी के पैने दाँत जब त्वचा पर गड़ते हों तो क्या रह जाता है? तुम्हारा आत्मतोष-देह इन्सिपिड, कंटेंटमेंट। मैं इसे एस्केप कहूँगी या इनेक्शन।"[1]

अपने अस्थिर बेचैन क्षणों में उसे अनायास उसकी सखी शालिनी स्मरण हो जाती है। जो अपने तपे चेहरे से अबूझ सदा अव्यवस्थित रहती थी। पारिवारिक परिवेश में मां, शरत भैया, भाभी और बीच-बीच में संबंधों में घिर घिर आता सन्नाटा। चेतना के प्रवाह का सिलसिला निरंतर अबाध गति से चलता रहता है। कहीं क्षण भर के लिए अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह तक भले ही यह सिमट आए, पर शीघ्र ही चेतना वापस लौट जाती है। अतीत को वर्तमान में पकड़ती हुई क्षणों में वह अतीत में लौट जाती है। **"बचपन में मां और बाबू जी के साथ कश्मीर गई थी। हरे-भरे पर्वतों की पीठ से रपटकर नीचे नदी के किनारे बैठी हुई घाटियाँ..... छिटपुट मकान..... कहीं-कहीं तो..... दृश्य की मनोरमता से स्तब्ध हो जाना उसे याद है। उसके साथ ही उठती एक बेचैन जिज्ञासा।"[1]**

'तत्सम' की मनोवैज्ञानिकता निम्न प्रकार है-

अंतर्द्वंद्व:

हमारी आकांक्षाओं की सिद्धि के मार्ग में असंख्य बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं। तब ऐसी विवश बना देने वाली स्थिति के लिए दबाव या अंतर्द्वंद्व आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हमारे जीवन में ऐसी अनेक परिस्थितियों आती हैं जिससे इन द्वंद्वों से बच निकलना कठिन हो जाता है। 'तत्-सम' उपन्यास में लगभग सभी पात्र इस मन:स्थिति से जूझते नज़र आते हैं।

वसुधा का अंतर्द्वंदव: निखिल के चले जाने के बाद वसुधा के जीवन में लगातार ऐसे प्रसंग तथा परिस्थितियां आती गई कि वह अपने अंतर जगत की उथल-पुथल से बाहर नहीं निकल पाती। शरत भैया और भाभी जितनी जल्दी उसका पुनर्विवाह कराना चाह रहे हैं, वे पिता की जगह स्थानापन्न हैं, अतः उनकी बात का विरोध भी नहीं कर पाती। न विरोध कर पा रही है, न विवाह के लिए तैयार है और ना ही अपनी मन:

---

1. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 302
2. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 258

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थिति से शरत भैया को अवगत करा पाती है। ऐसे में क्या करे समझ नहीं पाती - **"क्यों ना कह दे कि यह तैयारी उसके भीतर नहीं है.... नहीं है उन सब बातों का स्वागत....। जिंदगी के स्वागत के नाम पर भी नहीं। भीतर ठहर गया है सब कुछ। वह क्षण.... वह बात.... वह रास्ते.... वह चौखटें.... पता नहीं किस बात में जीवनसत्व की तरलता को सोख लिया है पूरे का पूरा। मन में बदलाव की चेष्टा है न इच्छा। पर कुछ भी कहना नहीं हो पाता, नहीं हो पाएगा.... पैर जैसे धरती से चिपके पड़े हैं।"**[1] वह तो आजन्म निखिल की स्मृतियों के साथ जीवन बिताना चाहती थी, परंतु पता नहीं तब कैसे मन की चौखट पर विवेक दबे पांव आकर खड़ा हो गया है। मन फिर डाँवाडोल हो गया है। भीतर अपने आप से संघर्षरत है- **"क्या वह उसी देह में, उसी मन में है जो आजन्म स्मृतियों के सहारे जी सकने की परितोष में स्थित हो गया लगता है। क्या वह वही है जिसे इतनी तीखी लगा करती थी भैया भाभी की बातें।"**[२]

विवेक के मन के बंद दरवाजों पर दी गई दस्तक का कोई प्रतिउत्तर ना पाकर वसुधा द्वारा किया गया प्रयत्न, वसुधा को भी अपराध बोध की कीच में लथेड़ जाता है। भोर की उजास के लिए प्रतीक्षित मन फिर अंधेरे की ओर उन्मुख होने लगता है। आस उसे बार-बार हाँ-ना के हिंडोले पर सवार कर देती है। वह असमंजस में पड़ जाती है। समझ नहीं पाती कि जिन दीवारों को वह ढहा चुकी है, वह कैसे बार-बार उसके तथा विवेक के बीच निर्मित हो जा रही है। किसी प्रत्याशा ने ही उसे लखनऊ जाने से रोक रखा है, पर प्रत्याशा फलीभूत नहीं होती। विवेक की तटस्थता वसुधा को हताश एवं विराट कर देती है। विधवा की ओर बढ़ने वाले मौकापरस्त हाथों की कमी नहीं है समाज में। यह सहारे के लिए आगे नहीं बढ़ते हैं, बल्कि नोचने, खसोटने की मंशा से ही प्रेरित होते हैं ये हाथ। लोगों की ऐसी प्रवृत्ति के कारण वसुधा हताश हो जाती है। विवेक की तटस्थता उसकी हताशा को और बढ़ा देती है। अपनी हताशा से उबरने के लिए ही वसुधा दक्षिण भारत की यात्रा पर निकल जाती है। वहां मुसीबत की घड़ी में आनंद का साथ मिलता है। शुरु शुरु में तो शंकित मन उसमें निहित स्वार्थ को ही तलाशता रहता है,परंतु जल्दी ही अपनी शंका निर्मूल प्रमाणित हो जाती है। मन में फिर भी सब कुछ साफ साफ नहीं है। आनंद के प्रस्ताव पर वह फिर अंतर्द्वंद्व से गुजरती है। जिन परिस्थितियों एवं मन है स्थिति से वह गुज़र रही है, उसमें दो टूक निर्णय की गुंजाइश ही नहीं है। **"किसलिए किसी निर्णय के दूसरे हैं - 'हां या ना' जबकि इन दोनों के बीच भी कितना कुछ होता है.... उबड़ खाबड़ पठार.... काली पथरीली चट्टानें जहां पानी का अस्तित्व होता भी नहीं है, नहीं भी होता है। पत्थरों का बेरिस पानी झर-झर बहता है। तुला की भुजाएं इधर या उधर झुकने तक, कंपन के कितने महीन अटकावों की कैद में बेचैन थरथराती रहती है। कितनी ही आवाजें हैं जो गूंजती है पर कहीं नहीं पहुंचती। इन सब होने का क्या लाभ होता है। न निर्णय न अनिर्णय। दबाव के ना रहे होने का दबाव ....इस होने को छू पाने की बेचैनी।"**[३]

1. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 26
2. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 95
3. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 233

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विवेक का अंतर्द्वंदव: विवेक के मन पर शिरीन की स्मृतियों का आच्छादन है, वसुधा की पहल उसने एक हलचल मचा देती है, परंतु उस हलचल को वह अपने भीतर ही जज़्ब किए रहता है।वसुधा को स्टेशन छोड़ने के लिए जाते हुए, रास्ते की उसकी छुट्टी ही उसके मन के द्वंद्व की परिचायक है। अंतर्द्वंदव से न गुजर रहा होता तो सामान्य रूप से बातचीत कर रहा होता। **" विवेक बंद है पूरी तरह। किन शिखरों पर?.... किन घाटियों में? कहां उलझा बैठा है, उसे कुछ भी नहीं पता। किस बात ने डाल दी होगी वाणी पर ऐसी जकड़ीली अर्गला? किस कथन नेसोख लिया है आदान-प्रदान का प्रवाही उत्साह?"**[1] विवेक के अंतर्द्वंद हो का पता चलता है, वसुधा को लिखे गए उसके पत्रों के द्वारा। वसुधा के प्रश्नों ने उसे झिझोड़ दिया है।वह लगातार उन्हीं प्रश्नों से जूझ रहा था - **"जीवन तो हर स्थल पर जवाब मांगता है। कारण पूछता है। घायल प्रताड़ित करता है, और तुम यह सब करती रही हो इन सब दिनों। कारण पूछती रही हो - पुकार को तानकर प्रत्युत्तर के लौटने के क्षण की भी प्रतीक्षा न कर सकने का कारण। पूछती रही हो रातों के घुप्प अंधेरे में मुझे जगाकर। झकझोर कर। प्रताड़ित करके। कभी सहलाकर। क्षमता-उदारता का वास्ता देकर।**[2] वसुधा से मिलने के बाद विवेक भी अंतर्द्वंदव में ही जीता रहा है। निर्णय-अनिर्णय के बीच तनाव की रस्सी पर चलता रहा है। निर्णय की स्थिति पर पहुंच कर ही वह वसुधा को पत्र लिखता है। इस प्रकार शिरीन की स्मृतियों के मोहपाश तथा वसुधा द्वारा दी गई जीवन की पुकार के बीच हिचकोले खाता द्वंदवग्रस्त मन अंततः स्मृतियों के मोहपाश से मुक्ति पा लेता है।

'निष्कवच' उपन्यास के पात्र भी परिस्थितियों के कारण द्वंदवग्रस्त मन:स्थिति में रहते हैं। वृत्तांत एक के विशाल, बासू तथा वृत्तांत दो का नायक विशाल - तीनों ही इसके शिकार हैं।

पहले वृतांत का नायक विशाल, बासू और नीरा के बीच बढ़ते संबंधों के कारण परेशान है। उसके भीतर का अभिभावक उसे नीरा के प्रति अतिरिक्त रूप से सजग एवं सतर्क किए रहता है। बासू का बिंदास व्यक्तित्व, मन में भय जगाता है कि बासू कहीं बँधकर नहीं रह सकता। ऐसे बासू के साथ नीरा का आगे बढ़ना ठीक नहीं है। इसी कारण वह अंतर्द्वंदव से जूझता रहता है - कैसे नीरा को समझाएं या फिर कैसे बासू को मनाए? इस सब के बीच अपनी भूमिका उसे उद्विग्न किए रहती है। उसकी उद्विग्नता, चिंता, ध्वनि को निम्नलिखित उदाहरणों से पुष्टि मिलती है।

1) "आगे के दिन.... अमूर्त अव्यक्त कुछ तो था जो हवा में सांस ले रहा था और मुझ जैसे मनोन्मुख आलसी आदमी को चौकन्ना कर गया था। क्या मैं बासू से अपने बदलते संसर्ग के बदलते माहौल से उद्विग्न था?"[३] बासू भी चाहता है कि कि नीरा से दूर हो जाए, क्योंकि विशाल तथा उसके घर वाले इस रिश्ते को नहीं पसंद करते हैं। वह विशाल के प्रति अपनी मित्रता को ईमानदारी से निभाना चाहता है। पर नीरा उसके पौरुष को ललकार कर उसे चित्त कर देती है, और बासू ना चाहते हुए भी नीरा की ओर खिंचता ही चला जाता है। उसका अंतर्द्वंदव इसी गहरी भूमिका के कारण है।

1. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 108
2. तत्सम: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 268
3. **निष्कवच**: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 26

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वृत्तांत दो का नायक तो हमेशा ही भीतरी उथल-पुथल में ही उलझा रहता है। अमेरिका में वह संघर्ष कर रहा है, मार्था के सहारे खड़े होने का प्रयत्न कर रहा है। माता-पिता तथा परिवार समझता है कि वह अमेरिका में बड़ा सुख में जीवन जी रहा है। वह उनसे सच्चाई बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाता है। चाहता है कि बता दे और भारत में ही रुक जाए, परंतु घर वालों से कुछ नहीं कह पाता। इसी उहा-पोह मैं वह घर आकर भी घर के आत्मीय सानिध्य से अछूता ही रह जाता है। - **"खोने की सरहद पर जाता-जाता लौट आता हूं। मां के क्षोभ से घबराता हूँ।अपने को कोसने में पड़ जाता हूं क्यों बार-बार उन्हीं चौखटों पर सिर पटकने की मजबूरी। मुझे याद क्यों नहीं रहता कि मैं अपने घर में हूं। अपने.... अपने घर।"**[१] मार्था उसकी मजबूरी है। वह मार्था को झेल रहा है। उस विदेशी धरती पर वह मार्था की दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र बनकर रह गया है। कई बार चाहता है कि मार्था के समक्ष इस कड़वे सच को उगल दे- **"यू आर नॉट माय आंसर मार्था - तुम मेरा समाधान नहीं हो। तुम किसी पेड़ की फुनगी पर हवा से आन लटका एक पत्ता हो, जो मेरी झोली में गिर रहा है....।"**[२] पर नहीं कहता। वह जानता है कि इस सच्चाई को जानने के बाद मार्था उसका साथ नहीं देगी। पात्रों के भीतर दो प्रकार का संघर्ष हो सकता है चेतन और अचेतन। चेतन संघर्ष वह है जो पात्रों के चेतन मन में हो, जिसके प्रति वह जागरूक हो उसके कारणों से भली प्रकार से परिचित हो। अचेतन संघर्ष वह होता है, जो पात्रों के अचेतन में ही सक्रिय हो, जिसके कारण से पात्र अनभिज्ञ हो। अचेतन संघर्ष में पात्र अपने आप को व्याकुल, बेचैन महसूस करता है, लेकिन उसके कारण को नहीं पकड़ता। उसके भीतर एक ऐसा विरोध भरा रहता है कि वह किसी भी स्थिति से मानसिक संतुलन नहीं बैठा पाता है। वसुधा के लिए सबसे ज्यादा पीड़ा जनक वर्तमान का वह क्षण था जब शरत भैया उसका पुनर्विवाह करना चाहते थे। उसके जीवन का ऐसा चौराहा था वसुधा के सामने जब उसे लगने लगा कि शायद वह अब बोझ बन गई है।

"अंतर्मुखी प्रवृत्तियों से परिचालित, अतीत के आक्रांत, ज़िद के अतिरेक से उत्पन्न जड़ता से ग्रासित ठंडी वृत्तियों से घिरे हुए असहज चरित्र विवेह की दूर से देखी नकाबी सहजता एवं वायवी संताप वसुधा को उसकी ओर आकर्षित करते हैं।"[3]

उपन्यास का तीसरा पात्र आनंद भी अपनी पीड़ा लिए हुए हैं। निम्मी से उसका प्रेम था और विवाह भी तय था पर एक अकारण संधि के चलते उसका विवाह दूसरे व्यक्ति के साथ हो गया था। आनंद को इससे गहरा आघात पहुंचा। मानसिकता से गुजर रहा था। अनाथ रूथ में भी मानसिकता के अंतर्गत दर्द भोगने की प्रवृत्ति है। इन उपन्यास के पात्रों में अंतर द्वंद्व चल रहा है फिर भी वे आगे बढ़ते दिखाई देते हैं।

---

1. **निष्कवच**: राजी सेठ, पृष्ठ संख्या 109
2. **निष्कवच - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 81
3. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 49

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हीनता ग्रंथि:

जब किसी व्यक्ति की इच्छा पूरी नहीं होती तब उसमें हीनता की भावना पैदा हो जाती है। हीनत्व भाव आंतरिक भाव है और इसका संबंध संवेगात्मक अनुभूति से है। व्यक्ति में धर्म, समाज, शरीर आदि किसी से भी संबंधित हीनता हो सकती है।

'तत्सम' उपन्यास में दो पात्र हीन भावना से ग्रस्त दिखाई देते हैं। एक है, इस उपन्यास की प्रमुख नायिका, वसुधा चौधरी और दूसरा नायक विवेक। यह दोनों पात्र अपराध ग्रंथि के शिकार हैं। विधवा वसुधा चौधरी इस उपन्यास की केंद्र बिंदु है। उसका पति निखिल एक दुर्घटना में मर चुका है। वह पढ़ी लिखी है और लखनऊ यूनिवर्सिटी में समाजशास्त्र की प्राध्यापिका है। यूथ फेस्टिवल में दिल्ली जाती है और यही पर वहां के लेक्चरर विवेक से मुलाकात होती हैं। वसुधा अपने भाई भाभी के पास रहती है। वह अपने पति निखिल की पीड़ा से अत्यंत दुखी है। उसके अंतर्मन में द्वंद्व चल रहा है। वसुधा के लिए निखिल की स्मृतियों से अपने को पूरी तरह से काट कर किसी और से जुड़ना गहरी मानसिक बेचैनी और संघर्ष का सवाल है। यह संघर्ष पतिव्रत्य विषयक संस्कार और नैतिकता को लेकर उतना नहीं है जितना निखिल के साथ उसके गहरे भावनात्मक संबंध को लेकर है। निखिल की मृत्यु के बाद वसुधा उसके साथ पत्नी रूप में बिताए गए जीवन की स्मृतियों के तंतु जाल से लिपटी हुई है। वसुधा के मन में पति के चले जाने पर गहरा दुख छा जाता है। बार बार उसने अपने पति की स्मृतियां आती हैं और कभी अपनी सखी रूथ तथा शालिनी का स्मरण हो जाता है। वसुधा अपने पति निखिल को याद करके सोचती है, **"ही वॉज़ ए पार्ट ऑफ हर।"**[1] वसुधा के मन की पीड़ा, द्वंद्व, बेचैनी सब का चित्रण गहरी संवेदना के साथ किया गया है।

दूसरा पात्र विवेक है जो इस उपन्यास का प्रमुख नायक है। वह भी एक अपराध ग्रंथि का शिकार है उसमें हीनता की भावना दिखाई देती है। विवेक दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है। विवेक विभिन्न परिस्थितियों में अपनी पीड़ा लिए हुए हैं। उसकी अपनी मानसिक और भावनात्मक समस्याएं है। जिसके कारण वह वसुधा को चाहता हुआ भी उससे शादी नहीं कर पाता। विवेक अपनी पत्नी शिरीन की पीड़ा भरी याद में जी रहा है। वह किसी कारणवश मर जाती है। उसकी मृत्यु के लिए खुद को जिम्मेदार मानता हुआ इस अपराध बोध से ग्रस्त प्रायश्चित के रूप में अपने समस्त जीवन को व्यर्थ बना देने का संकल्प लिए हुए है। प्रोफेसर विवेक अपनी पत्नी के अंतिम दिनों को भाव प्रवण होकर स्मरण करता हुआ पिघल जाता है। **"उसका चेहरा देखते ही पगला गया मैं। ऐसी आंखें, फटी फटी, डूबी हुई गीली। कातर। याचक। आंखों के कोए इतने सफेद की मरे कबूतरों की याद दिलाते थे। डॉक्टरों से क्या-क्या याचनाएँ नहीं की मैंने - दोज़ हार्टलेस बूट्स्। वह मेरी पीठ थपथपाते रहे और पलंग से उठ जाने का इशारा करते रहे।"**[2] विवेक भी वसुधा के समान ही अभाव में जी रहा है। अपनी पत्नी की पीड़ा की स्मृति में उसके मन में भी अलाव जलते है। विवेक जब मृत प्रेमिका शिरीन को याद करते हुए कहता है, **"शी वॉज़ ए पार्ट ऑफ मी।"**[३] वसुधा चौधरी और विवेक दोनों ही अपने मरे हुए को ढो रहे हैं। दोनों में हीनता की भावना है।

1. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 51
2. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 23
3. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 49

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर पीड़न:

पर पीडन एक काम विकृति है। पर- पीड़क अथवा पीड़क- तोष व्यक्ति पीड़ा पहुंचाकर, परी पुष्टि प्राप्त करता है। यह भाग बच्चों के प्रति भी मिलता है। एडलर के अनुसार, पर - पीड़न का मूल कारण हीनता ग्रंथि है। 'तत्सम' की नायिका वसुधा चौधरी और नायक विवेक में पर पीड़क की प्रवृत्ति दिखाई देती है। वसुधा अपने पति निखिल की मृत्यु के बाद विवेक की ओर आकर्षित होती हैं। उससे प्रेम करती है और उससे शादी करना चाहती हैं। वसुधा अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार हैं। किंतु अंत में वसुधा चौधरी आनंद के संपर्क में आती है। अपना सब कुछ उसी को मानकर अंतिम निर्णय ले लेती है। किंतु उसके पति निखिल की और इस उपन्यास का नायक विवेक की स्मृतियां अभी भी उसके मानसपटल में विद्यमान रहती हैं। वसुधा पीड़ा में डूबी हुई है। उसकी मानसिक पीड़ा का एक प्रसंग इस प्रकार है। **"अपने हितैषी। कैसे हैं, अपने हितैषी? किस प्रकार की है चिंता। माथे पर सिंदूर की तरह ही पोंछ डालना चाहते हैं, निखिल के साथ जुड़े जीवन खंड को। जैसे पेंसिल से लिखी गई थी वह सारी इबारत। रबर लिया और मिटा दिया गया। उन्हें क्या पता कितनी छोटी छोटी बातों पर बाधा पड़ी है, जिंदगी में। निखिल को आम खाने का शौक था अब तो आम देखने तक की इच्छा नहीं होती। मीठे चावलों पर लट्टू था तो उसे निषिध्द कर गया है कोई। आलू का भरता - आंवले की चटनी। पुल के नीचे का निर्जन रास्ता, पन्नालाल घोष का बांसुरी वादन, युद्धों के कथानक पर बने चलचित्र, झटपुटे की बेकली भरे चिकने कंबल की गर्माई - कौन है, जो इन सब को छूने जाती उंगलियों की पोरों को सुन्न कर देता है एकाएक। कोई तो है भीतर, कोई तो?"**[1]

वसुधा पीड़ा की कशमकश को जिंदगी का सही सफर मानती है। विवेक अपने जीवन को अंधेरों में गाड़ देता है। **"जहां न कोई ध्वनि है, न पुकार, न प्रत्याघात, न किसी तरह का दायित्व।"**[2]

वसुधा चौधरी और विवेक पर - पीड़न प्रवृत्ति के शिकार हैं तथा इस उपन्यास के तीसरे पात्र आनंद में भी थोड़ी पर पीड़न झलकती दिखाई देती है।

कुंठा:

व्यक्ति की इच्छा पूर्ति में प्रकृति या व्यक्ति द्वारा बाधा पहुंचने पर कुंठा का निर्माण होता है। कुंठा अधिकतर सुशिक्षित व्यक्तियों में होती हैं। व्यक्ति की सफलता में रोड़े अटकाने, कार्य शारीरिक दोष जैसे कुरुपता, दुर्बलता या व्यक्तिगत दोस्त जैसे कुशलता की कमी, संकटों का मुकाबला करने की अक्षमता कुंठ पैदा करते हैं। कुंठा ही व्यक्ति को आत्महत्या को जन्म देती हैं।

'तत्सम' मैं नायिका वसुधा चौधरी विधवा, सुशिक्षित नारी हैं। वसुधा के भाई भाभी उसका पुनर्विवाह कराना चाहते हैं। वह और विवेक किन्हीं कारणों विवाह सूत्र में बंध नहीं पाते। जब उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती तब वह कुंठित हो जाती है। वह विवेक को पाना चाहती है, किंतु अंत में उसका संपर्क आनंद से होता है। विवेक, वसुधा से विवाह सूत्र में बंधने की इच्छा व्यक्त करता है वसुधा आनंद के पक्ष में ही निर्णय करती है। उसकी इच्छा का दमन हो जाता है और इसी इच्छा को लेकर कुंठित हो जाती है। उसे रह रह कर अपने पति की याद आती है और साथ ही उस के अंतर्मन में विवेक को पाने के लिए द्वंद्व छिड़ जाता

1. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 231
2. **तत्सम - राजी सेठ, पृष्ठ संख्या**. 79

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। इसी द्वंद्व को लेकर वसुधा चौधरी कुंठित हो जाती है। तीसरा आनंद नामक पात्र भी दुख पूर्ण है। उसमें भी एक प्रकार की कुंठा जागृत होती हैं। लेकिन आनंद से संघर्ष करके आगे बढ़ चुका है। वह भी विवेक की तरह ही अस्वस्थ है।

संदर्भ सूची

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1.	**राजी सेठ**	तत्सम	राजकमल प्रकाशन	2010
2.	राजी सेठ	निष्कवच	भारतीय ज्ञानपीठ	2005
3.	डॉ. सरोज शुक्ला	राजी सेठ का कथा साहित्य: चिंतन एवं शिल्प	विद्या प्रकाशन	2012
4.	इंटरनेट			